2019

HINDI

(Major)

Paper : 2.2

(Ritikalin Kavyadhara)

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए : 1×10=10

(क) किसने रीतिकाल को 'शृंगारकाल' कहा है?

(ख) 'कविप्रिया' किसकी रचना है?

(ग) 'छत्रसालदशक' किसने लिखा था?

(घ) घनानंद की कविताओं का मूल रस क्या है?

(ङ) महाकवि देव का वास्तविक नाम क्या है?

(च) किसने मतिराम को 'हिन्दी नवरत्न' में स्थान दिया है?

(छ) सेनापति द्वारा रचित किसी एक ग्रंथ का नाम लिखिए।

(ज) भूषण को किसने 'कवि भूषण' की उपाधि प्रदान की?

(झ) बिहारी द्वारा लिखित ग्रंथ का नाम लिखिए।

(ञ) 'कविकुलकल्पतरु' किसकी रचना है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के अति संक्षेप में उत्तर दीजिए : 2×5=10

(क) 'रसिकप्रिया' के रचयिता कौन हैं? यह किस कोटि का काव्य है?

(ख) "अजौं तरयौना ही रह्यो, श्रुति सेवत इक अंग।" यहाँ 'तरयौना' से क्या तात्पर्य है?

(ग) घनानंद की कविता का मूल भाव क्या है?

(घ) केशव की काव्य-भाषा की विशेषताएँ क्या हैं?

(ङ) भूषण द्वारा प्रयुक्त किन्हीं दो छंदों का नामोल्लेख कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए : 5×4=20

(क) "जब हन्यौ हैध्यराज इन बिन क्षत्र क्षितिमंडल कर्‌यो" —संदर्भ का उल्लेख करते हुए हैध्यराज के प्रसंग को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"सोभत दंडक की रुचि बनी।
भाँतिन-भाँतिन सुंदर धनी।"

—का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) अन्योक्ति क्या है? कवि बिहारी द्वारा रचित किसी एक अन्योक्तिपरक् दोहे का उल्लेख कीजिए।

अथवा

बिहारी की भाषा पर टिप्पणी लिखिए।

(ग) "अति सूधो सनेह को मारग है"—इसमें घनानंद के अनुसार 'सनेह को मारग' का तात्पर्य क्या है?

अथवा

घनानंद का कवि-परिचय प्रस्तुत कीजिए।

(घ) "पर काजहि देह कों धारि फिरौ परजन्य जथारथ है दरसौ।" —संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

अथवा

मतिराम का कवि-परिचय प्रस्तुत कीजिए।

4. अधोलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) भृगु-कुल कमल-दिनेस सुनि, जीति सकल संसार।
क्यों चलिहै इन सिसुन पै, डारत हो जस भार॥

अथवा

मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परत, स्यामु हरित दुति होइ॥

(ख) पाँयनि नूपुर मंजु बजै,
कटि किंकिनि में धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट-पीत,
हिये हुलसै बनमाल सुनाई।
माथे किरीट बड़े दृग चंचल,
मंद हँसी मुख-चंद-जुन्हाई।
जै जगमंदिर-दीपक सुंदर,
श्री ब्रज-दूलद देव-सहाई॥

अथवा

तेरे ही भुजान पर भूतल को भार,
कहिबे को सेसनाग दिगनाग हिमाचल है।
तेरो अवतार जग पोसन भरनहार,
कछु करतार को न तामधि अगल है।

5. केशवदास की कविताओं की विशेषताओं पर विचार कीजिए। 10

अथवा

बिहारी की कविताओं के कलापक्ष पर विचार कीजिए।

6. पठित कविताओं के आधार पर घनानंद की प्रेमानुभूति पर विचार कीजिए। 10

अथवा

कवि भूषण की कविताओं के अनुभूति-पक्ष पर प्रकाश डालिए।

★★★